कर्तव्यनिष्ठा

प्रस्तावना

यदि हम अपने कर्तव्य का पालन ठीक से करते हैं तो समाज में कभी कोई भेद पैदा नहीं हो सकता। यदि रेल या बस में सुरक्षित यात्रा करना, सडक पर निर्भयता से चलना हमारा अधिकार है तो बस में चढने के लिए कतार में खडे होना हमारा कर्तव्य है। सडक के नियमों का पालन करना हमारा कर्तव्य है। यदि हर नागरिक अपना अपना कर्तव्य प्रामाणिकता से करता है तो कभी किसी के अधिकारों का हनन नहीं होगा और समाज तथा देश में कभी कोई विवाद पैदा नहीं होगा।

अगर हम अपने घर में, शादी विवाह में खाना बर्बाद नहीं करते हैं तो किसी गरीब के पेट में वह अन्न जा सकता है किसी की भूख मिट सकती है। अत: अन्न की बर्बादी रोकना, पानी की बर्बादी रोकना, अपनी सोसायटी, मुहल्ले और सडकों व स्टेशन को साफ सुथरा रखना हमारा कर्तव्य है। पर ऐसे कितने लोग प्रमाणिकता से बोल सकते हैं कि वे अपने कर्तव्य का पालन करते हैं. क्या हमारे देश के नागरिकों में कर्तव्यनिष्ठा है- यह एक बडा सवाल है जिसका जवाब आपको देना है।

प्रश्न

१. अपने कर्तव्य जानते हैं ऐसे कौन कौन लोग हैं यहां, अपने कुछ कर्तव्यों के बारे में बताइए.
२. कभी आपसे कोई गलती हुई हो और आपको किसी ने अपने कर्तव्य का भान कराया हो, ऐसा कोई प्रसंग बताइए
३. स्वयंप्रेरणा से आपने किन कर्तव्यों का पालन किया है, कृपया बताइए.
४. हम अपनी कर्तव्यनिष्ठा की भावना को कैसे मजबूत करेंगे?
५. अधिकार और कतर्व्यों में से आप पहले किसे स्थान देते हैं और क्यों?

१. संत ज्ञानेश्वर

संत ज्ञानेश्वर बत्तीस साथियों के साथ कांवर लेकर हरिद्वार से रामेश्वर के लिए चले। हरिद्वार से मिट्टी के घड़ों में जल लिया और उसे कांवर की बहंगी रखा। एक लाठी के दोनों सिरों पर तराजू जैसे पलरों लटकाये जाते हैं, जिसमें जल से भरा घड़ा रखा जाता है और इसे कंधे पर लटका कर लोग चलते हैं। कांवरिये गंगा जल को घड़े या लोटे में भर कर पैदल यात्रा करते हैं और शिवलिंग पर चढ़ाते हैं। हरिद्वार से रामेश्वरम पैदल पहुंचने में लगभग तीन महीने लगते हैं।

कांवरिये शुद्धता का विशेष ध्यान रखते हैं, ये रास्ते में कहीं विश्राम के लिए रुकते तो अपनी कांवर को जमीन पर न रखते। उसे किसी पेड़ की डाल लटका देते हैं। केवल एक समय भोजन करते हैं।

कांवरियों हरिद्वार से चले बीस दिन हो चुके थे। तीन साथी रास्ते में ही हिम्मत हार कर घर वापस लौट चुके थे। उन्होंने रास्ते में पड़ने वाले मंदिर में ही जल चढ़ाकर अपनी यात्रा पूर्ण की। .

यात्रा का बयालीसवां दिन था, सबको अपने गंगा जल के घड़े बहुत हल्के दिखाई दे रहे थे। सब ने एक वट वृक्ष पर कांवर लटका कर घड़े खोल कर देखे। घड़ों में आधे से भी कम पानी रह गया था। इस तरह तो रामेश्वरम् तक सारा गंगा जल सुख जाएगा। संत ज्ञानेश्वर यात्रा में अधिकतर मौन ही रहते थे। सब ने उनकी ओर आशा भरी दृष्टि से देखा। संत ज्ञानेश्वर ने कुछ देर विचार किया और फिर बोले- अपने घड़ों पर कपड़े की कई तह करके लपेटो और उस कपड़े को सुखने मत दो।

उस पर थोड़ी-थोड़ी देर बाद पानी डालते रहो। घड़े के ऊपर गिला कपड़ा रहेगा तो अंदर के पानी नहीं सुखेगा। अब तक तेईस कांवरियों ही बचे थे। नौ कांवरिये अलग-अलग कारणों से यात्रा बीच में ही छोड़ चुके थे। साथियों में काना-फूसी होने लगी। पहले ही इतनी कठिन यात्रा, उस पर घड़े को निरंतर गिले रखने का कार्य। पांच साथियों ने अपने घड़े का जल पास के ही शिवलिंग पर चढ़ाकर अपनी यात्रा समाप्त कर दी।

धीरे-धीरे साथी कम होते जा रहे थे। किसी के पैरों में घाव, किसी के पैरों में सूजन और के पैरों में छाले पर चुके थे। संत ज्ञानेश्वर विश्राम के समय सब की सेवा करते, गरम पानी से पैरों की सिकाई करते, मिट्टी का लेप लगाते और सबको हिम्मत बंधाते। अब तो सब दिनों की गिनती भी भूल चुके थे। उन्हें दो महीने से अधिक का समय हो चुका था। दक्षिण भारत में प्रवेश हो चुका था।

अब केवल तेरह लोग बचे थे। शरीर से निढाल थे, लेकिन में मन में उत्साह और प्रसन्नता थी। मंदिर का फहराता ध्वज दिखाई दे रहा था। महीनों की यात्रा आज पूरी होने वाली थी। सबने प्रात: ही निश्चय कर लिया कि अब तो गंगा जल शिव भगवान को अर्पण करने बाद ही जल ग्रहन करेंगे। सागर की लहरे अब कुछ ही दूर थी। अब पैरों के नीचे जमीन नहीं सागर की रेत आ गई थी।

सागर की रेत में कुछ पड़ा था जो हिल रहा था। संत ज्ञानेश्वर उस स्थान पर पहुंचे तो देखा कि एक गधा रेत में अधमरा पड़ा था। वह बीच-बीच में अपनी जीभ निकाल कर संत ज्ञानेश्वर की ओर देखता और फिर कमजोरी से आंखें मूंद लेता। उसके प्राण जैसे कंठ में अटके थे। वह बहुत प्यासा था। संत ज्ञानेश्वर ने कहा- भाईयों इस गधे के लिए कुछ करना चाहिए। साथियों को अपना लक्ष्य सामने दिख रहा था। इस समय शिव के दर्शन में एक क्षण का विलम्ब भी ठीक नहीं लग रहा था। वह बोले- पहले शिवलिंग पर जल चढ़ा दें तब इसको देखेंगे।

एकाएक संत ज्ञानेश्वर बोले- मेरी यात्रा पूरी हुई। उन्होंने कांवर उतारी, उसमें से घड़ा उतारा, कपड़ा खोला और गंगा जल गधे के मुख में डालने लगे। सब साथी चिल्लाये यह आप क्या कर रहे हैं, लेकिन संत ज्ञानेश्वर ओम नम: शिवाय कहते गये और सारा जल गधे के मुख में डालते रहे। गधा जल पीकर संत ज्ञानेश्वर को अपलक निहारता रहा।

संत ज्ञानेश्वर भगवान शिव के सामने हाथ जोड़ कर बैठे थे। एकाएक शिवलिंग से आवाज आयी- ``ज्ञानेश्वर! तुम्हारा जल मुझे प्राप्त हो चुका है। तुमने जो किया वही तुम्हारा कर्तव्य था। तुम्हारे इस कार्य से मैं बहुत प्रसन्न हूं" !

संत ज्ञानेश्वर ने जो किया उन्हें वही करना चाहिए था। अपनी प्रकृति के अनुसार उन्होंने अपने कर्तव्य का ईमानदारी के साथ पालन किया।

२. प्रजा धर्म और चाणक्य

मौर्य साम्राज्यमें बार यूनान के राजदूत का आना हुआ तो उसने मौर्य साम्राज्य के महामंत्री चाणक्य की प्रशंसा प्रत्येक मनुष्य जो वंहा का रहने वाला और आस पास के लोगो के मुख से सुनी तो उसे भी चाणक्य से मिलने की इच्छा हुई कि देखूं तो सही इतना प्रभावशाली व्यक्ति है कौन आखिर ?

दरबार से पता पूछने के बाद राजदूत चाणक्य से मिलने के लिए उनके निवास स्थान गंगा के किनारे चल दिया ।वंहा पहुँचने के बाद देखता है कि गंगा के किनारे एक आकर्षक व्यक्तित्व का धनी लम्बा चौड़ा पुरुष नहा रहा था । जब वह आदमी नहा कर कपड़े धोने लगा तो राजदूत ने पास जाकर उस व्यक्ति से पूछा कि क्या आप चाणक्य का घर जानते है इस पर उस व्यक्ति ने सामने एक झौंपडी की और इशारा किया।

राजदूत को भरोसा ही नहीं हुआ कि किसी राज्य का महामंत्री इस साधारण सी झौंपड़ी में रहता होगा लेकिन फिर भी वो उस झौपडी की और चल पड़ा और भीतर जाकर उसने उस झौपडी को खाली पाया । यह देखकर राजदूत को लगा कि गंगा के किनारे उसे मिले उस व्यक्ति ने उसका मजाक बनाया है ऐसा सोचकर वो मुड़ने लगा तो क्या देखता है कि वही व्यक्ति उसके सामने खड़ा है ।

यह देखकर वो राजदूत उस व्यक्ति से कहने लगा " अपने तो कहा था न कि चाणक्य यंही रहते है लेकिन यंहा तो कोई नहीं है अपने मेरे साथ मजाक किया है क्या ?" इस पर वह व्यक्ति कहने लगा महाशय मैं ही चाणक्य हूँ कहिये क्या प्रयोजन है ? इस पर राजदूत हैरान रह गया कहने लगा "मौर्य सम्राज्य के महामंत्री और इतनी सरल दिनचर्या और वो भी इस झौपडी में निवास , कमाल है विश्वाश ही नहीं होता "

चाणक्य ने बड़ी सादगी से जवाब दिया कि अगर मैं महलों और राजभवन की सुविधाओं के बीच रहने लग जाऊ तो प्रजा के हिस्से में झोपडी आ जाएगी इसलिए मैं प्रजा धर्म का निर्वहन करते हुए यंहा रहता।

सुविचार

- कर्तव्य एक चुम्बक है, जिसकी ओर आकर्षित हुआ अधिकार दौड़ा आता है | **- अज्ञात**
- कर्तव्य पालन ही चित की शांति मूल मंत्र है| **-श्री प्रेमचंद**
- आत्मज्ञान का सम्पादन करना और आत्मकेंद्र में स्थिर रहना मानवमात्र का सबसे पहला और मुख्य कर्तव्य है | **-श्री स्वामी रामतीर्थ**
- जिस प्रकार दुसरो के अधिकार को सम्मान देना मानव का कर्तव्य है, उसी प्रकार अपना सम्मान रखना भी उसका कर्तव्य है | **-श्री स्पेन्सर**
- जो कम अभेद-भावना की और ले जाता है, वह सत्कर्म है, कर्तव्य है, करणीय है | **-डा. सम्पूर्णानन्द**
- बुराई से असहयोग करना मानव का पवित्र कर्तव्य है | **-श्री महात्मा गाँधी**

संकल्प

अपने कर्तव्य का निष्ठापूर्वक पालन करके समाज की व्यवस्था को बेहतर बनाने का हम संकल्प लेते हैं|